The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 9 | September 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

भारत–अमेरिका के संबंधो में प्रवासी भारतीयों की भूमिका

दिलीप श्रीवास्तव

शोधार्थी, उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, dsrivastava612@gmail.com

प्रोफेसर आनन्दा नन्द त्रिपाठी

राजनीति विज्ञान, उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.17328769

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 25-09-2025

Published: 10-10-2025

Keywords:

प्रवासी भारतीय, अर्थनीति, राजनीतिक व्यवस्था, कांग्रेसनल कॉकस, सॉफ्ट पावर, रणनीतिक

ABSTRACT

भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका दोनों विश्व के सबसे बड़े लोकतान्त्रिक देश हैं। भारत जहां विश्व का सबसे बड़ा लोकतान्त्रिक देश है, वही संयुक्त राज्य अमेरिका विश्व का सबसे पुराना लोकतंत्र वाला देश है।दोनों देशों के संबंधो को प्रभावित करने वाले कारको में प्रवासी भारतीयों की महत्वपूर्ण भूमिका है। प्रवासी भारतीय अमेरिकी अर्थनीति के साथ–साथ राजनीतिक व्यवस्था को निर्णायक गति देते हैं। 'कांग्रेसनल कॉकस ऑन इंडिया एंड इंडियन अमेरिकन्स' दोनो देशो के रिश्तों को मजबूत करता है। अमेरिका में प्रवासी भारतीय एक सॉफ्ट पावर की भूमिका निभाते हैं।प्रवासी भारतीयों के कारण ही दोनों देशो के आर्थिक संबंधों में सकारात्मक वृद्धि हो रही है।और रणनीतिक रिश्तों को नया आयाम मिल रहा है।

प्रस्तावना

प्रवास वह प्रक्रिया है, जिसमे व्यक्ति एक स्थान से दूसरे स्थान तक बहुधा राजनीतिक सीमाओं के परे स्थाई या अस्थाई आवास के लिए होता है। यह प्रक्रिया समय के साथ राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक –सांस्कृतिक परिवर्तनों को समाहित कर अनवरत गतिशील रहती है। दुनिया में अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन तब शुरू हुआ जब यूरोप में औद्योगिक क्रांति के दौरान राष्ट्र–राज्य की विचारधारा ने जोर पकड़ा जिसके परिणामस्वरूप उपनिवेशवाद दुनिया के चारों दिशाओं में फैला। रोजगार, व्यापार और बेहतर अवसर के लिये लोगों का सीमापार जाना एक प्राकृतिक प्रवृत्ति है, जो कि पूरी दुनिया में विकसित और विकासशील देशों के बीच देखी जा सकती है।

भारत के परिपेक्ष में देखा जाए तो प्रवासियों की संख्या के मामले में भारत विश्व में प्रथम स्थान पर है।भारतीय अमेरिका को अपना सबसे प्रिय गंतव्य देश के रूप में मानते हैं। भारत से संयुक्त राज्य अमेरिका में 19वीं शताब्दी की शुरुआत से भारतीय अप्रवासन प्रारंभ हुआ। लेकिन अमेरिका में भारतीय अप्रवासन अपेक्षाकृत 21वीं सदी के दशको में बड़े पैमाने पर हुआ। 2023 तक संयुक्त राज्य अमेरिका में रहने वाले 2.9 मिलियन भारतीय अप्रवासी कुल विदेशी मूल की आबादी का 6 प्रतिशत थे, और उनकी संख्या लगातार बढ़ रही है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से अधिकांश भारतीय प्रवासी पेशेवर नौकरियों में काम करने या अमेरिकी कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में अध्ययन करने के लिए आए थे। भारत अमेरिकी उच्च शिक्षा में नामांकित अंतरराष्ट्रीय छात्रों की दूसरी सबसे बड़ी संख्या का स्रोत है और इसके नागरिकों को उच्च–कुशल श्रमिकों के लिए नियोक्ता–प्रायोजित एच–1बी अस्थायी वीजा का बहुमत प्राप्त होता है।

प्रवासी भारतीय दोनों देशों के संबंधों को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण कारक माने जा रहे है। दोनों लोकतांत्रिक देशों के बीच बढ़ते संबंधों को **''21वीं शताब्दी की एक परिभाषित साझेदारी''** के रूप में देखा जा सकता है। यह साझेदारी अमेरिका में बढ़ती भारत की सॉफ्ट पॉवर के रूप में और भी मजबूत हो गई है। सॉफ्ट पॉवर किसी देश की आकर्षण और सहयोग के माध्यम से ना कि जबरदस्ती से अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर इच्छित परिणाम प्राप्त करने की क्षमता को दर्शाती है, जो अंतर्राष्ट्रीय मामलों के क्षेत्र में एक निर्णायक वास्तविकता है। सॉफ्ट पॉवर की मुद्रा सांस्कृतिक प्रभाव, राजनीतिक मूल्य और विदेशी नीतियां हैं। इसी तरह, भारत की सॉफ्ट पॉवर अमेरिकी धरती पर भारतीय प्रवासियों का बढ़ता प्रभाव है।

संयुक्त राज्य अमेरिका में भारतीय आबादी का फैलाव

दुनिया का सबसे अधिक आबादी वाला देश, भारत वैश्विक स्तर पर सबसे अधिक प्रवासियों का स्रोत है। 2023 तक 2.9 मिलियन से अधिक भारतीय अप्रवासी संयुक्त राज्य अमेरिका में रहते थे, जिससे यह देश संयुक्त अरब अमीरात के बाद भारतीयों के लिए दूसरा सबसे लोकप्रिय वैश्विक गंतव्य बन गया।

संयुक्त राज्य अमेरिका में भारतीय आबादी 1960 से लगातार और काफी हद तक बढ़ी है, जिसमें 2000 और 2023 के बीच सबसे अधिक आगमन हुआ है। औसतन, भारतीय अप्रवासी अत्यधिक कुशल हैं और अच्छी आय अर्जित करते हैं: अधिकांश के पास स्नातक की डिग्री या उससे अधिक है, उनकी औसत आय यू.एस. और कुल मिलाकर विदेश में जन्मे लोगों की तुलना में दोगुनी से अधिक है, और गरीबी में रहने की उनकी संभावना इन समूहों की तुलना में आधी है।

यह स्थिति एक सदी पहले की स्थिति से उलट है, जब कम संख्या में भारतीय अप्रवासी कम कुशल श्रमिकों के रूप में आते थे। 1965 के आव्रजन और राष्ट्रीयता अधिनियम के मद्देनजर आव्रजन में वृद्धि हुई, जिसने राष्ट्रीय मूल के कोटा को समाप्त कर दिया, जिसने कई भारतीयों और अन्य गैर–यूरोपीय लोगों को बाहर कर दिया था।

पिछले चार दशकों में भारतीय अप्रवासी आबादी में काफी वृद्धि हुई है। 1980 से 2000 तक यह पाँच गुना बढ़ गई, और 2000 से 2023 तक लगभग तीन गुना बढ़ गई (चित्र देखें)। यह आबादी कुल अमेरिकी विदेशी–जनित आबादी की तुलना में काफी तेजी से बढ़ रही है, जो 2010 से 63 प्रतिशत बढ़ी है, जबकि सभी अप्रवासियों के लिए यह 20 प्रतिशत है।

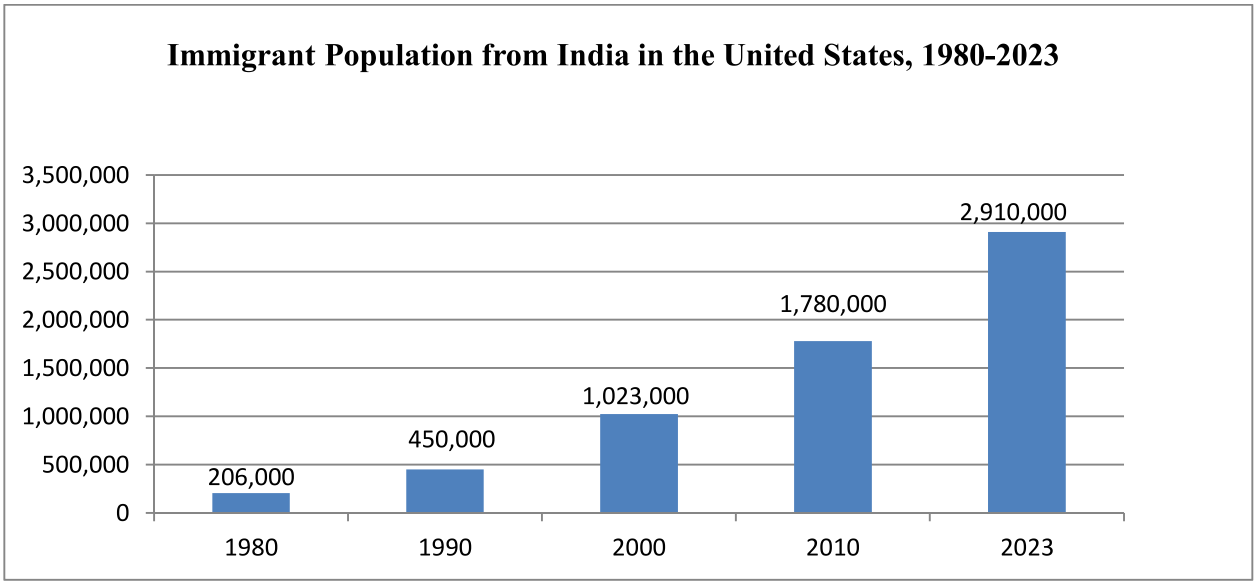

Source:Data from U.S. Census Bureau’s 2010 and 2023 American Community Surveys (ACS)

संयुक्त राज्य अमेरिका में भारत के सॉफ्ट–पावर पर प्रवासियों का प्रभाव

भारतीय प्रवासी भारत की सॉफ्ट पावर का प्रमुख स्रोत है ।अमेरिका के भीतर, भारतीय प्रवासी एक प्रभावी सार्वजनिक कूटनीति उपकरण हैं और अपने नैतिकता, अनुशासन, हस्तक्षेप ना करने और स्थानीय लोगों के साथ शांतिपूर्वक जीवन बिताने के लिए माने जाते हैं। ये मूल्य अंततः यू.एस में भारतीयों की पहचान बनाने, छवि प्रक्षेपण और छवि बनाने में योगदान करते हैं। भारतीय प्रवासी न केवल सॉफ्ट पावर के स्रोत है। बल्कि उनके अभिकर्ता भी है जैसा कि नीचे दिया गया है।

राजनीति में भागीदारी

वर्तमान में, अमेरिकी प्रतिनिधि सभा के सदस्य के रूप में छह भारतीय–अमेरिकी नेताओं ने शपथ ली है। इनमें अमी बेरा, सुहास सुब्रमण्यम, श्री थानेदार, रो खन्ना, राजा कृष्णमूर्ति और प्रमिला जयपाल शामिल हैं। छह भारतीय अमेरिकी मिलकर एक अनौपचारिक ‘समोसा कॉकस’ का गठन करते हैं, जो कृष्णमूर्ति की ओर से गढ़ा गया शब्द है। इनमे से चार भारतीय प्रमिला जयपाल, अमी बेरा, राजा कृष्णमूर्ति और रो खन्ना को तीन प्रमुख हाउस पैनल का सदस्य

नियुक्त किया गया है, जो अमेरिकी राजनीति में समुदाय के बढ़ते प्रभाव को दर्शाता है । प्रमिला जयपाल को इमिग्रेशन पर शक्तिशाली हाउस ज्यूडिशियरी कमेटी के पैनल के रैंकिंग सदस्य के तौर पर नामित किया गया है, जिससे वह इस पद पर रहने वाली पहली अप्रवासी बन गई हैं. ।

शिक्षा

हर साल बड़ी संख्या में लोग नौकरी और काम के सिलसिले में अमेरिका पहुंच रहे हैं। भारत से अमेरिका जाने वाले ज्यादातर लोग आईटी, फाइनेंस जैसे सेक्टर्स में काम करते हैं। दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाले मुल्क अमेरिका में काम करने वाले भारतीय बहुत ही ज्यादा पढ़े–लिखे हैं। हाल ही में सामने आई एक रिपोर्ट में भी इसका जिक्र किया गया है। अमेरिका में मौजूद थिंक–टैंक माइग्रेशन पॉलिसी इंस्टीट्यूट (MPI) ने देश में आने वाले प्रवासियों की शिक्षा को लेकर एक स्टडी की है।MPI की स्टडी के मुताबिक, अमेरिका में शिक्षित अप्रवासियों में सबसे बड़ा समूह भारतीय प्रवासियों का है। यूएस के शिक्षित अप्रवासियों में शामिल दुनिया के सभी देशों के नागरिकों में अकेले 14 फीसदी भारतीय हैं। 2022 तक के आंकड़ों के अनुसार, अमेरिका में 1.4 करोड़ पढ़े–लिखे अप्रवासी थे, जिन्होंने कॉलेज डिग्री हासिल की हुई थी। रिपोर्ट में बताया गया है कि 2018 से 2022 के बीच अमेरिका आने वाले 48 फीसदी अप्रवासियों के पास कॉलेज की डिग्री थी।

सांस्कृतिक एवं धार्मिक प्रभाव

अमेरिका में हिंदू समुदाय का प्रभाव लगातार बढ़ रहा है। पिछले 15 साल में अमेरिका में हिंदुओं की आबादी दोगुनी होकर लगभग सवा 22 लाख हो गई है। हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के प्लूरलिज्म प्रोजेक्ट के अनुसार, 20 साल पहले अमेरिका में 435 मंदिर थे, जिनकी संख्या बढ़कर लगभग 1000 हो गई है। मंदिरों की संख्या बढ़ने का कारण यहां आकर बसने वाले हिंदुओं की आबादी में इजाफा होना है। अमेरिका में हिंदू धर्म और संस्कृत का भी तेजी से विस्तार हुआ है। हिंदू धर्म और संस्कृति के प्रति बढ़ते रुझान को देखते हुए अब अमेरिका के कई शहरों में समर स्कूल शुरू किए गए हैं।

अमेरिका के कुछ प्रसिद्ध मंदिर

क्र.सं.	मंदिर का नाम	शहर	क्र.सं.	मंदिर का नाम	शहर
1	अक्षरधाम मंदिर	न्यू जर्सी	5	गणेश मंदिर	न्यूयार्क
2	श्री स्वामी नारायण मंदिर	अटलांटा	6	ब्रज हिन्दू मंदिर	पेंसिल्वेनिया
3	न्यू वृंदावन मंदिर	वेस्ट वर्जीनिया	7	हिन्दू मंदिर	ग्रेट शिकागो
4	श्री शिव विष्णु मंदिर	मैरीलैंड	8	श्री स्वामी नारायण मंदिर	ह्यूस्टन

अमेरिका में हिंदुओं की बढ़ती उपस्थिति जनसांख्यिकीय परिवर्तनों तक ही सीमित नहीं है। हिंदू अमेरिकन फाउंडेशन की रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि हिंदू अमेरिकी तेजी से राजनीतिक रूप से सक्रिय हो रहे हैं।

इसके अलावा, हाल के सालों में योग और ध्यान की लोकप्रियता में भारी इजाफा हुआ है। अमेरिका में योग, व्यायाम और तनाव से राहत पाने का एक लोकप्रिय रूप बन गया है।

भारतीय प्रवासियों की उपलब्धियां–

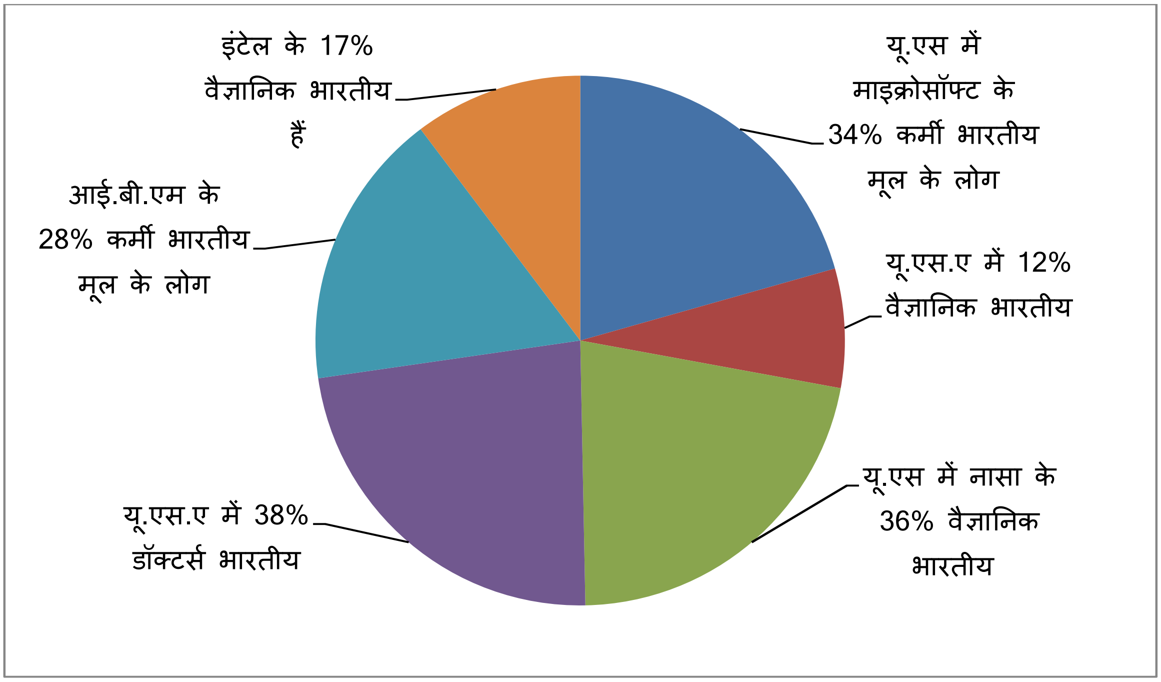

Source:2023 American Community Survey(ACS)

घरेलू आय एवं स्वास्थ्य बीमा

औसतन, भारतीयों की आय कुल विदेशी और मूलनिवासी आबादी की तुलना में बहुत अधिक है। 2021 में, एक भारतीय अप्रवासी के नेतृत्व वाले परिवारों की औसत वार्षिक आय $150.000 थी, जबकि सभी अप्रवासी और मूलनिवासी परिवारों की औसत वार्षिक आय $70,000 थी। कुल अप्रवासी और मूल निवासी आबादी की तुलना में भारतीयों के पास स्वास्थ्य बीमा कवरेज दरें अधिक हैं। 2021 में, भारत से आए केवल 5 प्रतिशत अप्रवासी बीमा रहित थे, जबकि मूल निवासी 7 प्रतिशत और कुल विदेश में जन्मी आबादी 19 प्रतिशत थी। विदेश में जन्मी और अमेरिका में जन्मी आबादी की तुलना में भारतीय अप्रवासियों के निजी स्वास्थ्य बीमा द्वारा कवर होने की संभावना अधिक थी। नवीनतम 'छोटा समुदाय, बड़ा योगदान, असीम क्षितिजः संयुक्त राज्य अमेरिका में भारतीय प्रवासी' रिपोर्ट में कहा गया है कि भारतीय अमेरिकी प्रतिवर्ष कर राजस्व में 300 बिलियन डॉलर का योगदान करते हैं और सभी अमेरिकी होटलों में से 60%के मालिक भारतीय ही हैं।

द्विपक्षीय संबंधों में प्रवासी भारतीयों की भूमिका

अमेरिका में प्रवासी भारतीय एक जीवंत समुदाय है जो प्रौद्योगिकी, व्यापार ,स्वास्थ्य सेवा, और शिक्षा जगत में योगदान दे रहा है एक मजबूत सांस्कृतिक उपस्थिति और बढ़ते प्रभाव के साथ भारतीय अमेरिकी भारत –अमेरिका संबंधो को आकार देने में महत्पूर्ण भूमिका निभाते है।

आर्थिक योगदानः

भारतीय प्रवासी, विशेष रूप से सिलिकॉन वैली में, कई सफल तकनीकी कंपनियों और स्टार्टअप की स्थापना और नेतृत्व करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारतीय–अमेरिकी समुदाय उच्च आय अर्जित करता है ।और कर राजस्व में महत्वपूर्ण योगदान देता है ।जिससे अमेरिकी अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलता है ।भारतीय–अमेरिकी समुदाय के स्वामित्व वाले होटल और सुविधा स्टोर अमेरिका में महत्वपूर्ण राजस्व उत्पन्न करते हैं और कई नौकरियां पैदा करते हैं ।

सांस्कृतिक योगदानः

भारतीय प्रवासी, अमेरिका में भारतीय संस्कृति और परंपराओं को बढ़ावा देते हैं।जिससे दोनों देशों के बीच समझ बढ़ती है और संबंध मजबूत होते हैं । भारतीय त्योहारों, जैसे दिवाली और होली को अमेरिका में व्यापक रूप से मनाया जाता है । योग और आयुर्वेद जैसी भारतीय प्रथाएं अमेरिका में लोकप्रिय हो रही हैं, जिससे सांस्कृतिक आदान–प्रदान को बढ़ावा मिलता है ।

सामरिक योगदानः

भारत–अमेरिका असैन्य परमाणु समझौते में भारतीय प्रवासियों (प्दकपंद कपेंचवतं) का योगदान मुख्य रूप से अमेरिकी कांग्रेस में समझौते के लिए समर्थन जुटाने और भारतीय–अमेरिकी लॉबीइंग के माध्यम से रहा है। भारतीय–अमेरिकी समुदाय ने समझौते के पक्ष में मजबूत पैरवी की और इससे द्विपक्षीय संबंधों को बढ़ावा मिला।

सामाजिक योगदानः

भारतीय–अमेरिकी समुदाय शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और अन्य क्षेत्रों में सक्रिय रूप से योगदान देता है।. वे अमेरिका–भारत संबंधों को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं ।व्यापार और निवेश को बढ़ावा देते हैं ।भारतीय–अमेरिकी समुदाय ने अमेरिकी राजनीति में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है ।जिसमें वे चुनाव में भाग लेते हैं और विभिन्न पदों पर चुने जाते हैं ।

अमेरिका में भारतीय प्रवासियों के समक्ष चुनौतियां

अमेरिका में भारतीय प्रवासियों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिसमें सांस्कृतिक और सामाजिक बाधाएँ मुख्य हैं। इनमें भाषा, रीति–रिवाज और परंपराओं में अंतर शामिल हैं, जो भारतीयों के लिए अमेरिकी समाज में एकीकृत होना मुश्किल बनाते हैं। भाषा संबंधी बाधाओं और भेदभाव जैसे विभिन्न कारकों के कारण रोजगार पाने और अपने करियर में आगे बढ़ने में भी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इसके अलावा कार्यस्थलों में विविधता की कमी, एवं नागरिक अधिकारों में प्रगति के बावजूद, नस्लीय भेदभाव अमेरिका में भारतीय प्रवासियों के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती बना हुआ है।

निष्कर्ष

भारत और अमेरिका के संबंध प्रारंभ में उतार –चढाव के रहे हैं। लेकिन जिस रूप में अमेरिका में प्रवासी भारतीयों की भूमिका बढ़ती जा रही है । उससे अमेरिका को भारत के साथ चलने की आवश्यकता बढती जा रही है। क्योंकि प्रवासी भारतीय अमेरिका में सामाजिक रूप से समृद्ध समुदाय माने जाते हैं ।प्रवासी भारतीय अमेरिकी प्रशासन के शीर्ष पदो पर असीन होकर निर्णय –प्रक्रिया को काफी हद तक प्रभावित कर रहे हैं। भारतीय प्रवासियों ने अमेरिका और भारत के बीच संबंधों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है। उन्होंने नौकरियों का सृजन करके, विकास को बढ़ावा देकर और देशों के बीच व्यापार और निवेश को बढ़ाकर आर्थिक संबंधों में योगदान दिया है। अमेरिकी सरकार में प्रवासी समुदाय की राजनीतिक उपस्थिति ने उन नीतियों की वकालत करने में मदद की है जो दोनों देशों को लाभ पहुंचाती हैं और सहयोग बढ़ाती हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

•धनुराज, डी. 'इंडिया यू.एस.ए. रिलेशंसः चेंज कंटिन्यूटी एंड ट्रांसफॉर्मेशन' सी.पी.पी.आई. पब्लिकेशन, कोच्चि, केरला, 2023।

•संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में भारतीय प्रवासी, शोधगंगा

•Dixit J.N. India's Foreign and its Naibours , Gyan Publishing House, New Delhi.2001.

•सिंह, उदय भान, 'अंतर्राष्ट्रीय संबंध– विभिन्न आयाम, मुद्दे और चुनौतियाँ', टाटा मैकग्रा हिल पब्लिकेशन,2022।

•सिंह,डॉ. शिशुपाल,'भारत अमेरिका संबंध बदलते आयाम',भारती प्रकाशन,वाराणसी,2021.।

•भाटिया, सुनील, अमेरिकन कर्माः नस्ल, संस्कृति और पहचान भारतीय प्रवासी, न्यूयॉर्क यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयॉर्क और लंदन, 2007।

•खन्ना एंड अरोड़ा, "भारतीय विदेश नीति", विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली,2005।

•जैन, पुष्पेश पंत, "21 वीं शताब्दी में अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध", मैकग्रा हिल एजुकेशन प्राइवेट इंडिया लिमिटेड, चेन्नई,2022।

•Druiry, Allen, A Senate Journal 1943&1945, New York,McGraw Hill 1963.

•Dixit J.N. India's Foreign Policy Challenges of Terrorism: Fashioning New Interstate Equations Gyan Publishing House New Delhi 2002.

•Dutta,V.P. India's Freign Policy Since Indipendence National Book Trust New Delhi 2011.

•Fisher, MaÛine P. The Indian of New York City: A Study of Immigrants from India New Delhi. Heritage Publishers, 1980-

•Franklin, Frank George, Legislative History of Naturalization in the United States, New York.Arno Press 1969.

•Acharya, Shankar,India's Economy, Some issues and Answers, New Delhi, Academic Foundation. 1976

•Adams, Brooks, The New Empire, New York, The Macmillan Co. 1903

•अप्रवासन और कानून, अप्रवासन की राजनीती, 2018

Link:

•Migrationpolicy.org

•Icwa.in

•Mea.gov.in

•Usa.gov

•Data from U.S. Census Bureau's 2010 and 2023 American Community Surveys (ACS)